ISSN : 0972-2351

तटीय मेखला प्रबंधन

भाकृ अनुप
ICAR

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
कोच्ची

कृषि के प्रचार में राजभाषा हिन्दी की भूमिका

मनोज कुमार और ओम प्रकाश जोशी
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

यह स्पष्ट है कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का उद्देश्य न केवल देश की कृषि अनुसंधान, शिक्षा व प्रसार गतिविधियों को 21 वीं सदी में विश्व स्तर तक ले जाना है बल्कि इसे देश के आम किसानों व जनसामान्य से भी जोड़े रखना है ताकि इस देश में हुई प्रगति का लाभ आम किसानों व जनसामान्य को मिले और साथ-साथ विश्व में कृषि अनुसंधान, शिक्षा व प्रसार में जो प्रगति हो रही है उससे भी देशवासी परिचित होते रहें। इसके लिए आवस्यक है कि वर्तमान की भांति भविष्य में भी नई-नई प्रौद्योगिकियों को किसानों व आमजनों तक पहुंचाने के लिए राजभाषा हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को अपनाया जाए। परिषद के प्रशासनिक तथा वैज्ञानिक कार्यों में राजभाषा हिन्दी का महत्व इसलिए बढ़ जाता है कि परिषद का विशाल तंत्र पूरे देश में फैला हुआ है और हिन्दी के माध्यम से विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी को किसानों व आमजनों में अधिक सक्षमतापूर्वक पहुंचाया जा सकता है। अपने प्रशासनिक कार्य में हिन्दी का उपयोग परिषद को इसलिए दिन-व-दिन बढ़ाना होगा कि विभिन्न विद्यालयों व विश्वविद्यालयों में हिन्दी माध्यम से विज्ञान में शिक्षा का विकल्प उपलब्ध होता जा रहा है, विज्ञान तथा प्रौद्यागिकी से संबंधित केन्द्र स्तर की प्रवेश परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम का विकल्प उपलब्ध करा दिया गया है और केन्द्र सरकार के लगभग सभी कार्यालयों की भर्ती परीक्षाओं व साक्षात्कारों में हिन्दी माध्यम का विकल्प दिया जा रहा है।

अनुसंधान के क्षेत्र में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए हिन्दी भाषी वैज्ञानिकों को आगे आना होगा। उन्हें अपनी अनुसंधान उपलब्धियां हिन्दी में भी प्रकाशित करनी होंगी जिसके लिऐ उन्हें अभ्यास से पहले प्रशिक्षण की भी आवश्यकता होगी। हिन्दी में विज्ञान लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए पुरस्कार योजनाएं चलाने के साथ-साथ अन्य

सुविधाएं भी उपलब्ध करानी होंगी। परिषद को अपना प्रकाशन तंत्र इतना विकसित करना होगा कि वैज्ञानिकों द्वारा हिन्दी में लिखी गई पुस्तकों को शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित किया जा सके। आज विश्वभर में सूचना विस्फोट की स्थिति है और विश्वभर में कृषि अनुसंधान इतनी तेजी से हो रहे हैं कि यदि उनके प्रकाशन में कुछ महीनों का ही विलम्ब हो तो वे अप्रासंगिक हो जाते हैं। परिषद को अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी प्रकाशन प्रणाली को भी इतना सुदृढ़ बनाना होगा कि जो भी पांडुलिपि तैयार हो वह शीघ्र से शीघ्र प्रकाशित हो सके।

विज्ञान का हिन्दीकरण करते समय हमें केवल अपने देश की सीमाओं में ही बंधकर नहीं रह जाना है बल्कि विश्व के विज्ञान साहित्य को भी हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराना है। विश्व के कई देश ऐसे हैं जहां अंग्रेजी से अधिक उनके देश की भाषा का उपयोग होता है। इन में से अधिकांश देश में ऐसी व्यवस्था है कि विश्व की किसी भी भाषा में छपी पुस्तक उनकी अपनी भाषा में अनूदित होकर अतिशीघ्र उपलब्ध हो जाती है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद यदि हिन्दी को विज्ञान की भाषा बनाना चाहती है तो यहां भी ऐसी व्यवस्था करनी होगी कि विश्व की किसी भी भाषा में उपलब्ध विज्ञान पुस्तक का हिन्दी में तत्काल अनुवाद हो सके। उसे प्रकाशित किया जा सके। ऐसा होने पर ही देश के हिन्दी जानने वाले आमजन, वैज्ञानिक व हिन्दी माध्यम से पढ़ने वाले छात्र तथा हिन्दी में शिक्षा देने वाले शिक्षक विश्व के नवीन कृषि अनुसंधानों व प्रौद्योगिकियों से परिचित हो सकेंगे।

कृषि प्रसार के क्षेत्र में हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का महत्व और भी बढ़ जाता है। वैज्ञानिक अनुसंधान चाहे जिस भाषा में हो लेकिन उन्हें यदि प्रौद्योगिकी के रूप में प्रयोगशाला से खेत तक पहुंचाना है तो राजभाषा हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं में उन्हें त्वरित गति से तैयार करना अत्यंत आवश्यक है। इस समय प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए प्रसार बुलेटिनों का प्रयोग हो रहा है। अगली सदी में शिक्षा के प्रसार प्रचार के साथ प्रसार साहित्य का महत्व भी बढ़ जाएगा। अतः यह आवश्यक है कि जो भी नये अनुसंधान हों उन्हें प्रौद्योगिकी के रूप में परिवर्तित करके किसानों व कृषि से जुड़े अन्य वर्गों तक हिन्दी भाषा में पहुंचाया जाए। त्वरित मुद्रण और बड़े पैमाने पर छपाई के लिए जिन नई-नई विधाओं का विकास हो रहा है परिषद द्वारा उन सभी को शीघ्रता से अपनाना होगा। अगली सदी कंप्यूटर, डी.टी.पी. फैक्स, लेजर प्रिंटिंग आदि से कहीं आगे होगी। परिषद, कृषि सूचना प्रणाली के मामले में विश्व में होने वाली प्रगति के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है। कंप्यूटरीकरण के साथ-साथ कृषि सूचना प्रणाली का तेजी से विस्तार हुआ है। इंटरनेट व ई-मेल जैसी सुविधाएं परिषद मुख्यालय व इसके संस्थानों में सुलभ होती जा रही हैं। हमें इस प्रगति को विश्व स्तर को बनाने के लिए इसमें हिन्दी व अन्य भाषाओं का अधिक से अधिक प्रयोग करना होगा क्योंकि कंप्यूटर व उपग्रह संचार प्रणाली परिषद के केवल बडे-बडे शहरों में मौजूद संस्थानों तक ही समिति नहीं है, बल्कि ये सुविधाएं परिषद के दूरदराज स्थित छोटे-छोटे केन्द्रों और कृषि विज्ञान केन्द्रों में भी उपलब्ध हो रहीं हैं। प्रौद्योगिकी प्रसार की अन्य विधाओं जैसे दूरदर्शन, रेडियो, वीडियो फिल्मों व अन्य फिल्मों में अंग्रेजी के स्थान पर परिषद के संस्थानों द्वारा हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं का प्रयोग दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। यदि हमें अगली सदी में प्रौद्योगिकी हस्तांतरण में होने वाली प्रगति को बढ़ाना है तो इन सभी क्षेत्रों में हिन्दी व भारतीय भाषाओं का अधिक से अधिक प्रयोग करना होगा जिसके लिए छोटे से छोटे केन्द्रों को भी इस प्रकार की सुविधाओं से सम्पन्न करना होगा।

भावी कृषि मानव संसाधन विकास में हिन्दी की भूमिका

वैश्विकरण के इस युग में भारतीय कृषि को आगे ले जाने के लिए तेजी से बदलती जरूरतों और भावी चुनौतियों के अनुरूप कृषि कार्य में लगी जनशक्ति की क्वालिटी, तकनीकी निपुणता और प्रबंधन में सुधार लाना अति आवश्यक है। अगर दी जाने वाली शिक्षा वर्तमान और भावी वास्तविकताओं के अनुरूप नहीं हैं तो राष्ट्रीय अनुसंधान विस्तार और कृषि व्यवसाय प्रणालियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

सभी गतिशील प्रणालियों में स्थिरता और बाहरी ताकतों के साथ संतुलन बनाए रखने के लिए मानव संसाधन विकास एक आवश्यक घटक है। मानव संसाधन विकास के बिना संगठन प्रगति नही कर सकतें हैं। अनुसंधान और विकास पद्धति में कोई बदलाव लाने या उसे नया रूप प्रदान करने का प्रयास करने से पहले मानव संसाधन विकास के क्षेत्र में तदनुरूप पहल करनी आवश्यक है। प्रणाली और सेवाओं संबंधी सभी सुधारों में संसाधन विकास की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

नई चुनौतियों का सामना करने, उच्च टेक्नोलॉजी वाली कृषि के लिए उन्नत प्रौद्योगिकी जरूरतों को पूरा करने और अग्रणी विषयों में चुनौतियों का सामना करने के लिए स्नातकों को तैयार करने हेतु हमें ऐसे कृषि स्नातकों की जरूरत होगी जो आधुनिक विज्ञान, कंप्यूटर प्रयोग, सूचना प्रणाली, जैव प्रौद्योगिकी, आण्विक जैविकी, समेकित नाशी कीट प्रबंध, समेकित प्रोध पोषक तत्व प्रबंध, कृषि व्यापार, खाद्य प्रौद्योगिकी और सक्षम फसल उत्पादन प्रौद्योगिकी की अच्छी जानकारी रखते हैं। निजीकरण और विश्वव्यापीकरण से नये रास्ते खुले हैं लेकिन साथ ही पारस्परिक प्रतिस्पर्धा भी बढ़ी है। अधिकाधिक मशीनीकरण और उत्पादन तकनीकों को आधुनिक बनाने पर अधिक जोर देने की बात पर हमारे प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में भी अधिक बल दिया जाना चाहिए।

भारत में कृषि शिक्षा विभिन्न स्तरों पर चल रही है जो सामान्य जानकारी से लेकर विज्ञान और प्रौद्योगिकी के स्तर तक की है। विश्व और राष्ट्रीय स्तर पर उठने वाला मूल प्रश्न यह है कि भावी पीढ़ी के लिए किस प्रकार की कृषि शिक्षा की जरूरत है? इसलिए भावी शिक्षा की योजना बनाते समय हमें इस संदर्भ में कृषि शिक्षा के उद्देश्य, प्रक्रिया और लक्ष्यों का पता लगाना होगा। विश्व और राष्ट्रीय स्तरों पर बदलते हुए सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में उच्च कृषि शिक्षा का पूरी तरह पुनरीक्षण करने की जरूरत है ताकि रोजगार-परक और मूलभूत शैक्षिक जरूरतों के बीच दीर्घकालिक आधार पर संतुलन बनाया जा सके।

इन सभी के लिए आवश्यक है कि देश में उपलब्ध मानव शक्ति को अधिक से अधिक कृषि मानव संसाधन विकास में शामिल किया जाए। चूंकि हिन्दी भारत सरकार की राजभाषा है और संपूर्ण देश में इसका तेजी से प्रसार हो रहा है अतः हिन्दी भाषी छात्रों को एम.एस.सी. व पीएच.डी. स्तर की शिक्षा हिन्दी माध्यम से देकर हम उन्हें सहज रूप से विज्ञान व प्रौद्योगिकी के निकट ला सकते हैं और उनकी प्रतिभा का अधिक से अधिक उपयोग कर सकते हैं। ●